# प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की वाचन कौशल संबंधी दशा एवं दिशा : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

**चंचला कुमारी**

**शोधार्थी,**

**आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय**

**पटना।**

**सारांश**

**प्रस्तुत शोध पत्र प्राथमिक विद्यालय के कक्षा** -5 **के विद्यार्थियों की वाचन के दौरान की जानेवाली त्रुटियों के स्वरूप का अध्ययन करने पर केंद्रित है। इस अध्ययन हेतु भागलपुर जिले से उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन द्वारा चयनित दो प्रखंडों से यादृच्छिक प्रतिदर्शन द्वारा चयनित कुल आठ प्राथमिक विद्यालयों के कक्षा** -5 **के कुल** 240 **विद्यार्थियों का चयन किया गया। आंकड़ों के संकलन हेतु स्वनिर्मित अवलोकन अनुसूची तथा साक्षात्कार का प्रयोग किया गया । शोधार्थी ने अवलोकन अनुसूची द्वारा प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत निकालकर कर किया। आंकड़ों के विश्लेषण से पाया कि** 62.5% **विद्यार्थी वाचन शैली तथा उच्चारण संबंधित त्रुटियां** 65.1% **मात्रा तथा वर्तनी संबंधित त्रुटियां जबकि** 56.3% **वाचन में गति तथा शारीरिक स्थिति संबंधित त्रुटियां करते पाए गए। जबकि विद्यार्थियों द्वारा की जाने वाली वाचन संबंधित त्रुटियों के कारणों को ज्ञात करने हेतु संबंधित विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों ,शिक्षकों तथा कुछ अभिभावकों से साक्षात्कार के पश्चात पाया गया कि विद्यालयों में आधारभूत संरचनाओं की अनुपलब्धता , विद्यालय तथा अभिभावकों के बीच उचित संचार का अभाव ,विद्यालय से घर की अधिक दूरी , विद्यार्थी का खराब स्वास्थ्य तथा अभिभावकों की बच्चों में वाचन कौशल के विकास संबंधी जागरूकता का अभाव इत्यादि के कारण सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में बच्चे वाचन संबंधी विभिन्न प्रकार की त्रुटियां करते पाए गए।**

**प्रस्तावना**

"वाचन कौशल" अर्थात बोलकर पढ़ने संबंधी कौशल सुनना ,बोलना ,पढ़ना और लिखना चार भाषाई कौशलों में से एक है। प्रारंभिक विद्यालयों तक इन कौशलों पर विद्यार्थियों की निपुणता हासिल हो सकें ऐसी अपेक्षा की जाती रही है। परंतु वर्तमान समय में यह देखा जाता है कि बच्चे प्रारंभिक कक्षाओं से माध्यमिक या उच्च माध्यमिक कक्षाओं तक तो येनकेनप्रकारेण पहुंच जाते हैं परंतु उनमें "पढ़ना" ,"लिखना" जैसे बुनियादी कौशलों का सर्वथा अभाव ही पाया जाता है। ऐसा विभिन्न सरकारी तथा गैर- सरकारी संस्थाओं द्वारा किए जा रहे सर्वेक्षणों से निरंतर ही ज्ञात होता रहा है। प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में "पढ़ने" और "समझकर पढ़ने" दोनों ही की स्थिति चिंताजनक है। वास्तव में विद्यालयी शिक्षा में "पढ़ना" अधिकांश बच्चों के लिए अर्थहीन ,यांत्रिक एवं बोरिंग प्रक्रिया बनकर रह गई है ।हालांकि देखा जाए तो पढ़ना एक ग्राही प्रक्रिया है जिसमें पाठक पढ़ने के क्रम में अर्थ का निर्माण करता है तथा कभी-कभी अर्थ को संशोधित भी करता है। पढ़ने के क्रम में पाठक लिपिबद्ध भाषा की डिकोडिंग करता है, जिसके लिए पाठक को अक्षर ध्वनि से परिचय, वाक्य संरचना संबंधी समझ, विषयवस्तु का ज्ञान /समझ ,वर्तमान एवं आगे का अनुमान लगाने संबंधी कौशल इत्यादि का होना आवश्यक है। इन सभी

के आलोक में ही बच्चा पढ़ी हुई विषयवस्तु को समझने में सक्षम होता है। खासकर जब बच्चों को पढ़ी गई विषयवस्तु से संबंधित पूर्व अनुभव होता है। तो बच्चे पढ़ी गई विषयवस्तु को ज्यादा अच्छे से समझ पाते हैं तथा दैनिक जीवन से उन विषयवस्तु को सह- संबंधित कर पाते हैं। वस्तुतः प्राथमिक विद्यालय में सीखने -सिखाने की प्रक्रिया का एक प्रमुख उद्देश्य पाठ्य पुस्तकों की पढ़ाई करना ही नहीं बल्कि उनमें सुबोपल्ली संबंधी दक्षताएं एवं कौशल सुनना ,बोलना ,पढ़ना और लिखना का विकास करना है (काण्डपाल 2017 )।

वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में शिक्षण- अधिगम प्रक्रिया को केंद्र में रहकर विद्यार्थियों की अधिगम संबंधी विभिन्न आयामों का निर्धारण किया जा रहा है । शिक्षा - नीति ,पाठ्यचर्या ,पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि, विद्यालयी परिवेश इत्यादि सभी स्तरों पर बच्चों के सीखने -सिखाने की प्रक्रिया को प्रभावकारी एवं रुचिकर बनाया जा रहा है। बावजूद इसके प्राथमिक विद्यालय में बच्चों में वाचन क्षमता संबंधी दक्षता का उम्र एवं कक्षा के अनुरूप नहीं पाया जाना हमारे लिए सिर्फ चुनौतीपूर्ण ही नहीं अपितु सक्रिय हस्तक्षेप की आवश्यकता को भी प्रदर्शित करता है।

## शोध का औचित्य

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के भाग-एक के प्रावधान संख्या -21 में वर्णित है कि पढ़ना ,लिखना और संख्याओं के साथ कुछ बुनियादी संक्रियाओं को करना विद्यालय शिक्षा के साथ-साथ जीवन भर सीखने रहने हेतु नींव का कार्य करती है (राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 )। बच्चों की वर्तमान के साथ-साथ भविष्य में किए गए कार्य संबंधी सफलता /असफलता का संबंध उनके पढ़ने -लिखने जैसे बुनियादी कौशलों से हैं ।हालांकि विभिन्न सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थानों (असर, राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण इत्यादि )द्वारा किए गए सर्वेक्षणों से स्पष्ट ज्ञात होता है कि प्राथमिक विद्यालय में पढ़ना- लिखना जैसे बुनियादी कौशलों में बच्चे उम्र तथा कक्षा के सापेक्ष दक्ष नहीं है। अतः यह ज्ञात करना आवश्यक है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालय में वाचन के दौरान विद्यार्थी द्वारा की जाने वाली त्रुटियों का स्वरूप क्या है? साथ ही साथ सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की वाचन कौशल संबंधी वर्तमान स्थिति के क्या कारण है? इन्हीं प्रश्नों को शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु आधार बनाया गया।

## शोध उद्देश्य

1. सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा- 5 के विद्यार्थियों द्वारा वाचन के दौरान की जाने वाली त्रुटियों के स्वरूप का अध्ययन करना।
2. सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों द्वारा की जाने वाली वाचन संबंधी त्रुटियों के कारणों का अध्ययन करना ।

## शोध का परिसीमन

इस कार्य हेतु शोधार्थी द्वारा बिहार के भागलपुर जिले के दो प्रखंडों (नाथनगर एवं सबौर) से ही सरकारी प्राथमिक विद्यालयों का चयन किया गया है।

## शोध विधि

शोधार्थी द्वारा वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि को इस शोध कार्य हेतु उपयोग किया गया है ।

**न्यादर्श**

उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन विधि द्वारा भागलपुर जिले के 17 प्रखंडों में से दो प्रखंडों (नाथनगर एवं सबौर )का चयन किया गया है। इनमें से प्रत्येक प्रखंड से चार-चार सरकारी प्राथमिक विद्यालयों का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि द्वारा किया गया। जहां कक्षा- 5 की पढ़ाई होती है। प्रत्येक विद्यालय से कुल 30 विद्यार्थियों का चयन करते हुए दोनों प्रखंडों से कुल 240 विद्यार्थियों का चयन प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु किया गया।

**शोध उपकरण**

इस शोध कार्य हेतु शोधार्थी के द्वारा वाचन के दौरान विद्यार्थियों द्वारा की जाने वाली त्रुटियों से संबंधित आंकड़ों के संग्रहण हेतु स्वनिर्मित अवलोकन अनुसूची का उपयोग किया गया जबकि विद्यार्थियों द्वारा वाचन संबंधित त्रुटियों के कारणों को ज्ञात करने हेतु प्रधानाध्यापक ,शिक्षकों सहित कुछ अभिभावकों से साक्षात्कार लिया गया।

**आंकड़ों का संकलन, विश्लेषण एवं निर्वचन**

शोधार्थी ने जनवरी 2024 में बिहार के भागलपुर जिले के सबौर तथा नाथनगर के चयनित सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में से विद्यार्थियों को कक्षा- 5 की पर्यावरण अध्ययन विषय के पाठ -1 "बीजों का बिखरना" की कुछ पंक्तियों को बारी-बारी से पढ़वाकर स्वयं उनका अवलोकन किया ।अवलोकन के दौरान ही शोधार्थी द्वारा प्रत्येक विद्यार्थियों द्वारा वाचन के दौरान की जाने वाली त्रुटियों का अवलोकन करते हुए संबंधित अवलोकन अनुसूची पर टिक (✓)लगाकर चिन्हित कर लिया गया तथा विद्यार्थियों द्वारा की जाने वाली वाचन संबंधी त्रुटियों के कारणों को ज्ञात करने हेतु संबंधित विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों, शिक्षकों सहित कुछ अभिभावकों से शोधार्थी द्वारा साक्षात्कार लिया गया।

**1. उद्देश्य-सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा -5 के विद्यार्थियों द्वारा वाचन के दौरान की जाने वाली त्रुटियों के स्वरूप का अध्ययन करना।**

शोधार्थी ने विद्यार्थियों को कक्षा -5 के पर्यावरण अध्ययन विषय की पाठ-1 "बीजों का बिखरना" को बारी-बारी से पढ़वाने पर उनमें निम्नलिखित प्रकार की त्रुटियों को सूचीबद्ध किया:

- पढ़ते समय आंख की स्थिति पढ़ी जाने वाले वर्णों या शब्दों पर नहीं रखकर इधर-उधर ध्यान देना।
- बोलकर पढ़ने की क्रम में किताब को आंख के बिल्कुल नजदीक लाकर पढ़ना।
- किताब को हाथ में उठकर पढ़ना।
- वर्णों या शब्दों को अटक-अटक कर पढ़ना।
- बिना अर्थ को समझे हीं जोर-जोर से पढ़ना।
- कुछ शब्दों को बीच में धीरे-धीरे से पढ़ना।
- पहले शब्दों का गलत उच्चारण करना फिर उसे ठीक उच्चारण करने का प्रयास करना।
- पढ़ने के क्रम में शब्दों में सम्मिलित वर्णों के क्रम को उलट -पलट कर पढ़ना जैसे रहट के स्थान पर टहट बीज के स्थान पर जीव इत्यादि।
- वर्णों या शब्दों का सही उच्चारण नहीं कर पाना।

- पाठ को या तो बहुत धीमा या बहुत जोर-जोर से पढ़ना।
- पढ़ने की गति कक्षा- 5 के अनुकूल नहीं होना।
- कुछ बच्चों का पाठ को बिल्कुल नहीं पढ़ पाना।

इस प्रकार 240 विद्यार्थियों संबंधी अवलोकन अनुसूची द्वारा प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण कर शोधार्थी द्वारा प्रतिशत निकाला गया और पाया गया कि 62.5% बच्चों में वाचन शैली तथा उच्चारण संबंधित त्रुटियां ,65.1% बच्चों में मात्रा तथा वर्तनी संबंधित त्रुटियां जबकि 56.3 प्रतिशत बच्चों में वाचन में गति तथा शारीरिक स्थिति संबंधित त्रुटियां वाचन के दौरान की गई हैं।

**2.उद्देश्य -सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों द्वारा की जानेवाली वाचन संबंधी त्रुटियों के कारणों का अध्ययन करना।**

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों द्वारा की जाने वाली वाचन संबंधित त्रुटियों के कारणों को ज्ञात करने हेतु जब संबंधित विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों, शिक्षकों तथा कुछ अभिभावकों से साक्षात्कार लिया गया तो शोधार्थी द्वारा पाया गया कि

- अधिकांश सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में दो-तीन कमरों में ही वर्ग संचालन किया जा रहा है ।ऐसे में वह कक्षा में अधिक संख्या में विद्यार्थियों की उपस्थिति से बच्चों को पाठ के वाचन के दौरान ध्यान केंद्रित करने में कठिनाइयां महसूस की जाती है। ऐसी स्थिति में अधिकांशत विद्यार्थियों द्वारा पाठ को बिना अर्थ समझें ही जोर-जोर से पढ़ा जाता है।
- विद्यालयों तथा अभिभावकों के बीच उचित संचार का अभाव जैसे शिक्षक- अभिभावक संगोष्ठी में अभिभावकों की अनुपस्थिति ,विद्यालय में प्रधानाध्यापकों / वर्ग शिक्षकों द्वारा बार-बार बुलाए जाने पर भी अधिकांश अभिभावकों का विद्यालय नहीं आना इत्यादि।
- विद्यालय का घर से दूर होने के कारण भी कई विद्यार्थी नियमित रूप से विद्यालय नहीं आ पाते हैं, जिससे वे वाचन कौशल सहित अन्य कौशल में भी पिछड़ते जाते हैं।
- कुछ विद्यार्थी का लगातार बीमार रहना एवं विद्यालय से अनुपस्थित रहना ,हकलाकर या तुतलाकर बोलना इत्यादि भी वाचन कौशल में उनकी दक्षता को प्रभावित करता है ।कुछ अभिभावकों द्वारा स्वयं के बच्चों की वाचन कौशल संबंधी जानकारी विद्यालयों से समय-समय पर प्राप्त करने संबंधी जागरूकता का अभाव पाया गया है इत्यादि।

**निष्कर्ष**

शोधार्थी द्वारा निष्कर्षस्वरूप पाया गया कि भागलपुर जिले के दोनों प्रखंडों (सबौर और एवं नगर निगम) से चयनित सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में अधिकांशतः आधारभूत संरचनाओं की अनुपलब्धता, विद्यालय तथा अभिभावकों के बीच सक्रिय संचार का अभाव ,विद्यालयों की विद्यार्थियों के घर से अधिक दूरी, विद्यार्थियों का खराब स्वास्थ्य, अभिभावकों में बच्चों के पठन कौशल विकास संबंधी जागरूकता का अभाव इत्यादि के कारण ही अधिकांश विद्यार्थियों में वाचन के दौरान वाचन शैली ,उच्चारण ,मात्रा एवं वर्तनी , वाचन में गति एवं शारीरिक स्थिति से संबंधित त्रुटियां पाई गई हैं।

## सुझाव

**सरकारी प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में वाचन कौशल के समुचित विकास हेतु निम्नलिखित सुझावों पर अमल किया जाना चाहिए:**

1. विद्यालयों में यथाशीघ्र समुचित संख्या में वर्ग -कक्षों की उपलब्धता को सुनिश्चित की जानी चाहिए।

बच्चों में वाचन कौशल विकसित करने हेतु विद्यालय में पढ़ने का कोना की उपलब्धता, सूचना पत्र में लिखी गई सूचना को विद्यार्थियों को पढ़ने हेतु प्रेरित किया जाना ,विद्यालय में बाल- पत्रिकाएं, समाचारपत्र इत्यादि की उपलब्धता इत्यादि काफी सहायक सिद्ध होते हैं।

3. बच्चों को विभिन्न विषयों चाहे वह हिंदी हो या अंग्रेजी हो या पर्यावरण अध्ययन हो में बोलकर विषयवस्तु को पढ़े जाने का अवसर दिया जाना चाहिए।

4. शिक्षकों को बहुस्तरीय एवं विद्यार्थी केंद्रित शैली में प्रशिक्षित किए जाने का अवसर दिया जाना चाहिए (निपुण भारत,2021)।

5. बीमारी अथवा किसी व्यक्तिगत कारणों से लगातार अनुपस्थित रहनेवाले विद्यार्थियों की वाचन कौशल को विकसित करने हेतु उन्हें अलग से उपचारात्मक- शिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए।

6. अभिभावकों को खासकर ग्रामीण क्षेत्र के अभिभावकों को अपने बच्चों के पठन- पाठन से संबंधित जागरुक किए जाने की आवश्यकता है।

7. अभिभावकों , परिवार तथा विद्यालयों के बीच तालमेल तथा समरसता होना चाहिए।

8. वैसे बच्चे जो पाठ को बिल्कुल ही बोलकर पढ़ नहीं पाते उन्हें "मिशन दक्ष" के अंतर्गत शामिल किया जाना चाहिए।

9. बच्चों में व्यक्तिगत वाचन को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

## संदर्भ

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ,मानव संसाधन विकास मंत्रालय ,भारत सरकार।

2. काण्डपाल, केवलानंद (2017).प्राथमिक कक्षाओं में भाषा शिक्षण , भारतीय आधुनिक शिक्षा ,अंक-3 ,जनवरी 2017 ,एनसीईआरटी, पृष्ठ संख्या- 59 -72.।

3. राष्ट्रीय साक्षरता एवं संख्या ज्ञान दक्षता पहल (निपुण भारत ,2021),स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।

4. पढ़ें भारत बढे भारत, प्रारंभिक कक्षाओं में समझ के साथ पढ़ना -लिखना और गणित कार्यक्रम, मानव संसाधन विकास मंत्रालय ,स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग, भारत सरकार।

5. सिन्हा ,पवन (2019).शिक्षा और अभिभावकों का दायित्व, प्रारंभिक शिक्षक ,अंक -एक ,जनवरी 2019, एनसीईआरटी, पृष्ठ संख्या 5-13

6. मिशन दक्ष, बिहार सरकार ,शिक्षा विभाग, पत्रांक 329 ,दिनांक 21 .11.2023